ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Receivedon 28th Feb 2018, **Revised** on 7th Mar 2018; **Accepted** 17th Mar 2018

शोध पत्र

प्रारम्भिक स्तर पर अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता का अध्ययन

* **धर्मेन्द्र सिंह**, शोधार्थी
शिक्षा संकाय, महाराजा गंगासिंह विष्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान
Email: dhepa9414@gmail.com, 9636577233 (M)

मुख्य शब्द – *अध्यापन–मूल्यांकन, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन आदि।*

सारांश

जगत गुरू शंकराचार्य की दृष्टि से शिक्षा वह है, जो मुक्ति दिलाये (''सं विद्या या विमुक्तेय'' – शंकराचार्य)। गाँधी जी ने शिक्षा के विषय में कहा है – ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास में है।'' राष्ट्र के निर्माण में प्रभावशाली शिक्षकों की भूमिका को नकारा नही जा सकता। एच.जी.वेल्स ने शिक्षकों को महत्व को बताते हुए कहा है – ''शिक्षक इतिहास का निर्माता है। राष्ट्र का इतिहास विद्यालयों में लिखा जाता है और विद्यालय अपने शिक्षकों की गुणवत्ता से बहुत भिन्न नही हो सकते।'' समाज की वर्तमान पीढ़ी की स्थिति को देखकर लगता है कि ऐसा कुछ अवश्य है जो वर्तमान युवा पीढ़ी को नही सिखाया जा सकता है। कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि – ''भारत को भाग्य का निर्माण की कक्षाओं में हो रहा है।'' राष्ट्र निर्माण का यह पावन कार्य शिक्षक कर रहे है।

लेकिन आज शिक्षक की शिक्षण कुशलता, उसकी कार्यशैली आदि प्रश्नांकित क्यों हो गयी है? वर्तमान में शिक्षण एक वेतनभोगी वृत्ति–समूह है जो पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रमों को कक्षाओं में पढ़ाता है, अध्यापन–मूल्यांकन के नियम उसे बने बनाये मिलते हैं। शिक्षक कक्षाओं में विद्यार्थियों के साथ सामूहिक तौर पर अन्तःक्रिया करता है। इसी प्रकार शिक्षक के शिक्षण की गुणवत्ता का आंकलन भी कठिन है क्योंकि विद्यार्थियों की सफलता में किस शिक्षक का कितना योगदान है और विद्यालय के बाहर के अन्य तत्वों जैसे अभिभावक या समाज का कितना योगदान है निश्चित तौर पर आंकलन किया जाना संभव नहीं है। इसी प्रकार यह तय नहीं किया जा सकता है कि किसी शिक्षक का अपने विद्यार्थी के समग्र विकास में कितना और कितनी दूर पर प्रभाव पड़ा? वर्तमान अध्ययन में प्रारम्भिक स्तर के अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता औसत से अधिक है।

प्रस्तावना

जगत गुरू शंकराचार्य की दृष्टि से शिक्षा वह है, जो मुक्ति दिलाये (''सं विद्या या विमुक्तेय'' – शंकराचार्य)। गाँधी जी ने शिक्षा के विषय में कहा है – ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास में है।'' राष्ट्र के निर्माण में प्रभावशाली शिक्षकों की भूमिका को नकारा नही जा सकता। एच.जी.वेल्स ने शिक्षकों को महत्व को बताते हुए कहा है – ''शिक्षक इतिहास का निर्माता है। राष्ट्र का इतिहास विद्यालयों में लिखा जाता है और विद्यालय अपने शिक्षकों की गुणवत्ता से बहुत भिन्न नही हो सकते।'' समाज की वर्तमान पीढ़ी की स्थिति को देखकर लगता है कि ऐसा कुछ अवश्य है जो वर्तमान युवा पीढ़ी को नही सिखाया जा सकता है। कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि – ''भारत को भाग्य का निर्माण की कक्षाओं में हो रहा है।'' राष्ट्र निर्माण का यह पावन कार्य शिक्षक कर रहे है।

लेकिन आज शिक्षक की शिक्षण कुशलता, उसकी कार्यशैली आदि प्रश्नांकित क्यों हो गयी है? इस सम्बन्ध में कुछ विचारकों का मत है कि शिक्षक जन्मजात होते है, बनाए नहीं जाते है। लेकिन पूर्व व अनुसंधानों के परिणामों के द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि प्रशिक्षित शिक्षक अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में अधिक प्रभावशाली होते है। इस प्रकार यह कहना अनुचित नही होगा कि पूर्व व शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा शिक्षक कुशलता व गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है जिसमें शिक्षक शिक्षार्थियों के अधिगम को प्रभावशाली बनाने में सहयोग दे सके। शिक्षक की व्यावसायिक प्रभावशीलता उनकी एक पेशे के रूप में अधिष्ठापित होने की आवश्यकता है और आज के द्रुतगामी, परिवर्तनशील, तकनीकी समाज की मांग है।

शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक उसकी धूरी की तरह काम करता है। राष्ट्र निर्माण में उसकी अहम भूमिका होती है, वह राष्ट्र निर्माता जैसी पद्वी को सुशोभित होता है। अब तक की इस प्रतिस्थापित अवधारणा में तथा अध्यापक की भागीदारी की अवधारणाओं में अब परिवर्तन आने लगा है।

आधुनिक युग में शिक्षकों में वृत्तिक प्रभावशीलता एक अहम् विषय बन गया है। इसे कई तरीके से अभिव्यक्त किया जा रहा है, जैसे शिक्षण का वृत्तिकरण किया जाना चाहिए अथवा शिक्षकों में वृत्तिवाद होना चाहिए। यह विचारधारा शिक्षकों के हर स्तर पर लागू है। प्राथमिक शिक्षा स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक जुड़े सभी शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे अपने कार्य से वृत्तिभाव से जुड़े और अपनी वृत्ति में दक्षता प्राप्त करें। वर्तमान में शिक्षण एक वेतनभोगी वृत्ति–समूह है जो पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रमों को कक्षाओं में पढ़ाता है, अध्यापन–मूल्यांकन के नियम उसे बने बनाये मिलते हैं। शिक्षक कक्षाओं में विद्यार्थियों के साथ सामूहिक तौर पर अन्तःक्रिया करता है। इसी प्रकार शिक्षक के शिक्षण की गुणवत्ता का आंकलन भी कठिन है क्योंकि विद्यार्थियों की सफलता में किस शिक्षक का कितना योगदान है और विद्यालय के बाहर के अन्य तत्वों जैसे अभिभावक या समाज का कितना योगदान है निश्चित तौर पर आंकलन किया जाना संभव नहीं है। इसी प्रकार यह तय नहीं किया जा सकता है कि किसी शिक्षक का अपने विद्यार्थी के समग्र विकास में कितना और कितनी दूर पर प्रभाव पड़ा?

उपरोक्त कारणों से यही निर्णय लिया जा सकता है कि शिक्षण अभी अर्ध–वृत्ति ही है जो वृत्तिकरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। हो सकता है निकट भविष्य में शिक्षण भी विशुद्ध वृत्ति हो जाये। शिक्षा का निजीकरण, वैश्वीकरण और तकनीकीकरण इसी ओर इशारा कर रहे हैं, परन्तु वृत्तिकरण के प्रवाह में शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पहलुओं को ध्यान में रखना पड़ेगा। अन्तोतगत्वा शिक्षण एक मिशन है। शिक्षण के एक वृत्ति के रूप में विकसित करके उत्साह से हमें उसमें प्रतिबद्धता के अनिवार्य तरह को विस्मृत नहीं कर देना है।

उपर्युक्त कारणों का अध्ययन करने हेतु शोधकर्ता ने इस समस्या की आवश्यकता महसूस की।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रारम्भिक स्तर पर अध्यापकों की कुल व्यावसायिक प्रभावशीलता एवं उसके आयामों का अध्ययन करना।
2. प्रारम्भिक स्तर पर अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता एवं उसके आयामों पर लिंग–भेद (पुरूष एवं महिला) के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. प्रारम्भिक स्तर पर अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता एवं उसके आयामों पर विद्यालय प्रकार (राजकीय एवं अराजकीय) के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. प्रारम्भिक स्तर पर अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता पर रहनिवास क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र) के प्रभाव का अध्ययन करना।

5. प्रारम्भिक स्तर पर अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता एवं उसके आयामों पर शैक्षणिक योग्यता (सीनियर सैकण्डरी एवं स्नातक व अधिक) के प्रभाव का अध्ययन करना।

6. प्रारम्भिक स्तर पर अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता एवं उसके आयामों पर प्रशैक्षणिक योग्यता (एस.टी. सी. एवं बी.एड.) के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. प्रारम्भिक स्तर पर अध्यापकों की कुल व्यावसायिक प्रभावशीलता एवं उसके आयामों पर प्रभावशीलता औसत से अधिक सकारात्मक है।

2. प्रारम्भिक स्तर पर पुरूष एवं महिला अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. प्रारम्भिक स्तर पर राजकीय एवं अराजकीय विद्यालय अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. प्रारम्भिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालय अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. प्रारम्भिक स्तर पर सीनियर सैकण्डरी एवं स्नातक व अधिक शैक्षणिक योग्यता वाले अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

6. प्रारम्भिक स्तर पर एस.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशैक्षणिक योग्यता वाले अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

प्रत्येक शैक्षिक अनुसंधान में चयनित शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण किया जाना आवश्यक है। यह परिभाषीकरण की प्रक्रिया चयनित चर के सैद्धान्तिक, व्यवहारिक एवं अनुसंधान स्वरूप को विकसित करती है। वर्तमान शोध अध्ययन के इस अध्याय में निम्नलिखित शोध चरों का परिभाषीकरण किया गया है –

1. **प्रारम्भिक स्तर** – ऐसे विद्यालय जिसमें कक्षा एक से आठ तक के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। जिसे दो भागों प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर में विभाजित किया गया है।

2. **विद्यालय** – विद्यालय का यदि सन्धि–विच्छेद किया जाए तो यह विद्या+आलय अर्थात् विद्या का घर होगा।

3. **अध्यापक** – एक स्वस्थ व शिक्षित समाज की बागड़ोर शिक्षक के हाथ में होती है। वह जैसा चाहे वैसे ही समाज को बदल सकते हैं। संसार की बड़ी से बड़ी क्रांति की ज्योति को सदैव ही प्रभावी शिक्षकों ने ही प्रज्जवलित किया है। अतः यह कहना गलत न होगा कि शिक्षक की गोद में प्रलय और निर्माण दोनों खेलते हैं। प्रलय से पहले सचेत होकर चाणक्य के निर्माण की

4. **व्यावसायिक प्रभावशीलता :–** व्यावसायिक प्रभावशीलता से तात्पर्य है कि शिक्षक अपने ज्ञान, प्रशिक्षण और अनुभवों द्वारा शिक्षार्थियों को शिक्षण व अधिगम के लिए उत्प्रेरित करता है। अध्यापक की व्यावसायिक प्रभावशीलता का आंकलन निम्न बिन्दुओं से किया जा सकता है :–

1. कक्षा–कक्ष व्यवस्था,

2. शिक्षण व्यूह नीतियॉं,

3. अन्तःवैयक्तिक सम्बन्ध,

4. सम्प्रेषण प्रभावशीलता,

5. व्यावसायिक मूल्य,

6. सामाजिक दायित्वों का निर्वाह आदि।

शिक्षक इस बौद्धिक कौशल पर आधारित सेवा प्रदान करता है। इसे व्यावसायिक प्रभावशीलता कहा जाता है।

प्रस्तावित शोधकार्य का महत्वः

किसी भी समस्या पर शोध कार्य करने से पूर्व यह देखना अत्यावश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोणों से उस समस्या का हल कितना आवश्यक है? अर्थात् उस समस्या पर शोध कार्य किया जाए तो इससे समाज एवं राष्ट्र को कितना एवं क्या लाभ होगा? अतः यह अध्ययन मात्र शिक्षा के दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि दूसरे दृष्टिकोणों से भी यह महत्वपूर्ण है जिसे निम्नतया स्पष्ट किया जा सकता है –

1. भावी शिक्षकों के लिए

विभिन्न स्तर पर संचालित अध्यापकों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं को शिक्षा महाविद्यालयों में पूर्ति का अवसर प्राप्त होता है। इन संस्थाओं के उचित विकास की अनेक योजनाएं सरकार बना रही है, ताकि स्तर में गुणवत्ता लायी जा सके। चूंकि, कल के समाज की नींव आज के विद्यालयी बालक ही हैं जिनके व्यक्तित्व का निर्माण विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के अनुरूप ही संभव हो पाता है, अतः प्रशैक्षणिक स्थिति को समुन्नत किया जाना आवश्यक है।

2. शिक्षा–शिक्षकों की दृष्टि से

इस अध्ययन के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुझावों से इस स्थिति में सुधार होगा, जिसका प्रत्यक्षत् लाभ इनमें कार्य करने वाले शिक्षा–शिक्षकों को मिल सकेगा।

3. सरकार की दृष्टि से

इस अध्ययन के माध्यम से राज्य तथा केन्द्रीय सरकार को उनके द्वारा चलाई जा रही अध्यापक प्रभावशीलता का परिवर्तित स्वरूप जो वास्तव में कुछ ओर है, ऽड्ड ýप्रद ञ्प्रइ"इप्रžद्र प्राप्त होगी जिससे वह और अधिक प्रभावी ढ़ंग से इन योजनाओं को क्रियान्वित कर सकेंगें।

4. अनुसंधान की दृष्टि से

प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा क्षेत्र में नवीन अनुसंधान को प्रेरित कर सकेंगे तथा नये अनुसंधानकर्त्ताओं को समस्या के अन्य पहलुओं पर विचार करने तथा नवीन खोजों को अभिप्रेरणा दे सकेंगे। उपरोक्त अध्ययन से प्राप्त परिणामों के अनुसार भावी शोधकार्यों हेतु आधार प्रदान होता है।

5.उपकरणों के वर्तमान सन्दर्भ में पुनरावलोकन के लिए आधार प्रदान होता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

भारत एवं विदेशों में अध्यापक व्यावसायिक प्रभावशीलता पर किये गये शोध कार्यो का अवलोंकन किया गया।

अनुसंधान विधि

अनुसंधान कार्य ''सर्वेक्षण विधि'' द्वारा पूर्ण किया गया है।

दत्त संग्रहण के स्रोतः

इस अनुसंधान कार्य के लिए दत्त संग्रहण के स्रोत के तौर पर भरतपुर व जयपुर जिले में अध्यापनरत शिक्षकों को शामिल किया गया है। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। शोधकर्त्ता ने कुल 600 अध्यापकों का न्यादर्श के रूप में चयन किया है जिसमें ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के महिला एवं पुरूष अध्यापकों को लिया गया है।

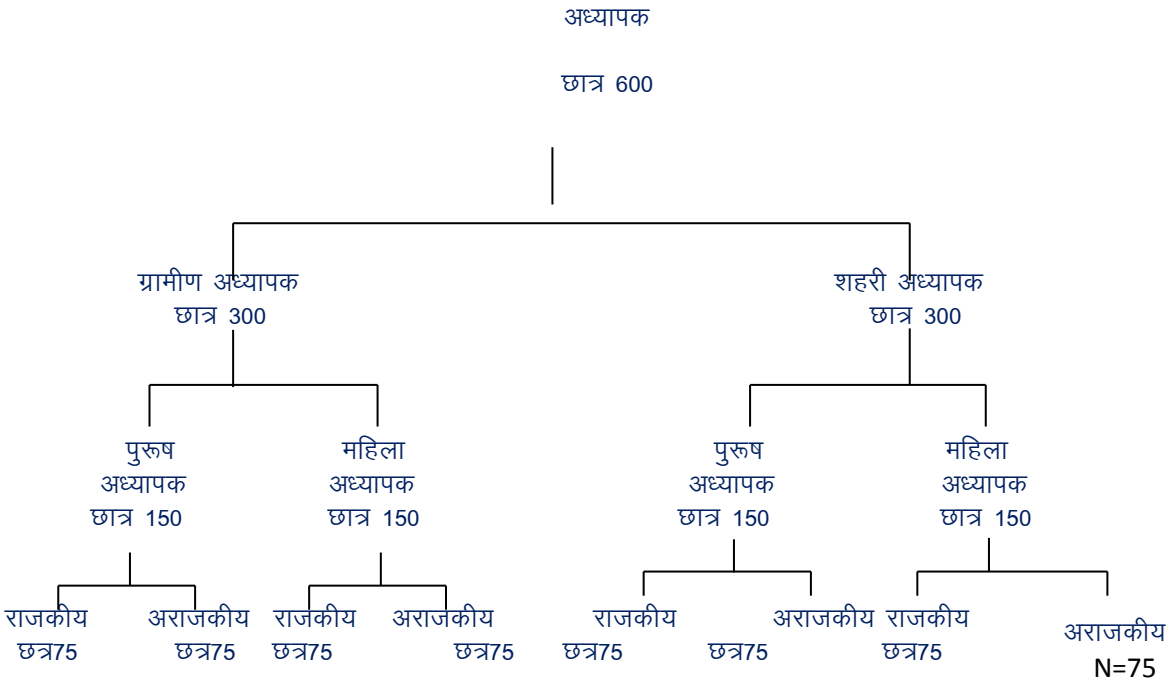

शोध का परिसीमांकन

शोध कार्य की गहनता एवं सूक्ष्मता की दृष्टि से शोधकार्य की सीमा निर्धारित करना आवश्यक है। समय एवं साधनों के सीमित होने के कारण शोधकार्य की भी निम्नलिखित सीमाएँ निश्चित की गई हैं :–

1. शोध हेतु अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता एवं उसके आयामों पर लिंग–भेद, ग्रामीण–शहरी, शैक्षिक एवं प्रशैक्षणिक स्तर के प्रभाव का ही अध्ययन किया गया है।
2. शोध हेतु भरतपुर व जयपुर जिले के प्रारम्भिक स्तर के विद्यालयों को लिया गया है।
3. शोध कार्य केवल 600 अध्यापकों तक ही सीमित है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य के लिये आंकड़ों का संग्रहण करने हेतु डॉ. मुन्नीश्वर शर्मा एवं डॉ. अशोक सेवानी द्वारा निर्मित अध्यापक प्रभावशीलता मापनी को संशोधित कर उपकरण का प्रयोग किया गया है।

दत्त विश्लेषण

शोधकार्य के दत्तों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत, माध्य, माध्य विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधि प्रयुक्त की गई।

निष्कर्ष

- प्रारम्भिक स्तर पर कुल अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता एवं उसके आयामों, प्रथम आयाम विषय–वस्तु प्रभावशीलता, द्वितीय आयाम सम्प्रेषण प्रभावशीलता, तृतीय आयाम कक्षा–प्रबन्ध प्रभावशीलता, चतुर्थ आयाम व्यक्तिगत प्रभावशीलता, पांचवे आयाम अध्यापक–छात्र प्रभावशीलता एवं छठे आयाम सामाजिक प्रभावशीलता पर औसत से अधिक है।
- प्रारम्भिक स्तर पर पुरूष एवं महिला अध्यापकों की कुल व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है। महिला अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता पुरूष अध्यापकों से अधिक है।

  प्राथमिक स्तर पर पुरूष एवं महिला अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता के आयामों, प्रथम आयाम विषय–वस्तु प्रभावशीलता, द्वितीय आयाम सम्प्रेषण प्रभावशीलता, तृतीय आयाम कक्षा–प्रबन्ध प्रभावशीलता, चतुर्थ आयाम व्यक्तिगत प्रभावशीलता, पांचवे आयाम अध्यापक–छात्र प्रभावशीलता एवं छठे आयाम सामाजिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

- प्रारम्भिक स्तर पर राजकीय एवं अराजकीय विद्यालय अध्यापकों की कुल व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

  प्राथमिक स्तर पर राजकीय एवं अराजकीय विद्यालय अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता के आयामों, प्रथम आयाम विषय–वस्तु प्रभावशीलता, द्वितीय आयाम सम्प्रेषण प्रभावशीलता, तृतीय आयाम कक्षा–प्रबन्ध प्रभावशीलता, चतुर्थ आयाम व्यक्तिगत प्रभावशीलता, पांचवे आयाम अध्यापक–छात्र प्रभावशीलता एवं छठे आयाम सामाजिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्रारम्भिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालय अध्यापकों की कुल व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है। कुल ग्रामीण अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता कुल शहरी अध्यापकों से अधिक है।

  प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालय अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता के आयामों, प्रथम आयाम विषय–वस्तु प्रभावशीलता, द्वितीय आयाम सम्प्रेषण प्रभावशीलता, तृतीय आयाम कक्षा–प्रबन्ध प्रभावशीलता, चतुर्थ आयाम व्यक्तिगत प्रभावशीलता, पांचवे आयाम अध्यापक–छात्र प्रभावशीलता एवं छठे आयाम सामाजिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्रारम्भिक स्तर पर सीनियर सैकण्डरी एवं स्नातक व अधिक शैक्षणिक योग्यता वाले अध्यापकों की कुल व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

  प्राथमिक स्तर पर सीनियर सैकण्डरी एवं स्नातक व अधिक शैक्षणिक योग्यता वाले अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता के आयामों, प्रथम आयाम विषय–वस्तु प्रभावशीलता, द्वितीय आयाम सम्प्रेषण प्रभावशीलता, तृतीय आयाम कक्षा–प्रबन्ध प्रभावशीलता, चतुर्थ आयाम व्यक्तिगत प्रभावशीलता, पांचवे आयाम अध्यापक–छात्र प्रभावशीलता एवं छठे आयाम सामाजिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्रारम्भिक स्तर पर एस.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशैक्षणिक योग्यता वाले अध्यापकों की कुल व्यावसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

  प्राथमिक स्तर पर एस.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशैक्षणिक योग्यता वाले अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता के आयामों, प्रथम आयाम विषय–वस्तु प्रभावशीलता, द्वितीय आयाम सम्प्रेषण प्रभावशीलता, तृतीय आयाम कक्षा–प्रबन्ध प्रभावशीलता, चतुर्थ आयाम व्यक्तिगत प्रभावशीलता, पांचवे आयाम अध्यापक–छात्र प्रभावशीलता एवं छठे आयाम सामाजिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

वर्तमान अध्ययन में प्रारम्भिक स्तर के अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता औसत से अधिक है। अतः वर्तमान में अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता में वृद्धि हुई है तथा वे अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठावान है।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत शोध में केवल भरतपुर एवं जयपुर जिले को ही लिया गया है। भावी शोध हेतु अन्य जिलों को भी लिया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध में लिंग–भेद, ग्रामीण–शहरी, शैक्षिक एवं प्रशैक्षणिक स्तर के प्रभाव का ही अध्ययन किया गया है। भावी शोध हेतु इसके अतिरिक्त अध्यापन अनुभव का भी अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श 600 अध्यापकों का लिया गया है। भावी शोध हेतु इससे अधिक न्यादर्श लिया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध में केवल प्रारम्भिक अध्यापकों को ही लिया गया है। भावी शोध हेतु माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्तर तथा महाविद्यालय स्तर के अध्यापकों को लिया जा सकता है।
5. भावी शोध हेतु विभिन्न विषय–वर्गों के अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता का भी अध्ययन किया जा सकता है।
6. भावी शोध हेतु अध्यापकों की व्यावसायिक समस्याओं तथा व्यावसायिक संतुष्टि को भी लिया जा सकता है।
7. आयु के आधार पर विभिन्न शैक्षिक स्तर के अध्यापकों की व्यावसायिक प्रभावशीलता का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Agarwal J.C. (1995). Essentials of Educationals Psychology. Vikas Publishing House Pvt. Ltd. New Delhi.
- Agarwal Y.P. (1989). Educationals Research in imerging field of education - Straling House, New Delhi.
- Akintoye, A., Hardcastle, C., Beck, M., Chinyio and Asenova, E. (2003). Achieving Best Value in Private Finance Initiative Project Procurement. Construction Management and Economics, 21 (5), 461-470.
- Anastasi, A. (1968). *Psychological Testing*, New York: The McMillan Company.
- Batley, R. and G. Larbi (2004): *The Changing Role of Government: The Reform of Public Services in Developing Countries*. Palgrave Macmillan, New York.

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-2005), नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ;छब्म्त्ज्द्वए पृ. 81–87.
- एमिडोन, इ.जे. एण्ड फ्लैण्डर्स, एन.ए. ''दी रोल ऑफ टीचर इन द क्लासरूम : ए मेन्यूअल फॉर अण्डरस्टेण्डिंग एण्ड इम्यूनिंग टीचर्स क्लासरूम विहेवियर'', एमीडोन एण्ड एसोसिएट्स मिनिपोलिस, 1963.
- एमिडोन, इ.जे. एण्ड हग, जे. ''इन्टेरेक्शन एनॉलिसिस थ्यौरी, रिसर्च एण्ड एप्लीकेशन'', रीडिंग एडीसन वैसले पब्लिशिंग कम्पनी, मैसेचुसेट्स, 1967.
- एडलसबर्गर, एच. ''हेण्डबुक फॉर इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी फॉर एजूकेशन एण्ड ट्रेनिंग'', न्यूयार्क स्प्रिंगर, 2002.

1. www.cbse.nic.in
2. www.education.nic.in
3. www.google.com
4. www.ncert.nic.in
5. www.springerlink.com

**** Corresponding Author:***

धर्मेन्द्र सिंह, शोधार्थी

शिक्षा संकाय, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान

Email: dhepa9414@gmail.com, 9636577233 (M)